

॥ श्री राम चरित मानस ॥

॥ राम ॥

श्रीगणेशाय नमः
श्रीजानकीवल्लभो विजयते
श्रीरामचरितमानस
चतुर्थ सोपान
(किष्किन्धाकाण्ड)
श्लोक

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ
शोभाद्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ ।
मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवर्माँ हितौ
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ॥ १ ॥

ब्रह्माम्मोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं
श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा ।
संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं
धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥ २ ॥

सो. मुक्ति जन्म महि जानि ग्यान खानि अघ हानि कर
जहँ बस संभु भवानि सो कासी सेइअ कस न ॥
जरत सकल सुर बृद बिषम गरल जेहिं पान किय ।
तेहि न भजसि मन मंद को कृपाल संकर सरिस ॥
आगें चले बहुरि रघुराया । रिष्यमूक परवत निअराया ॥
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा । आवत देखि अतुल बल सीवा ॥
अति सभित कह सुनु हनुमाना । पुरुष जुगल बल रूप निधाना ॥
धरि बटु रूप देखु तैं जाई । कहेसु जानि जियँ सयन बुझाई ॥
पठए बालि होहिं मन मैला । भागौ तुरत तजौ यह सैला ॥
विप्र रूप धरि कपि तहँ गयऊ । माथ नाइ पूछत अस भयऊ ॥
को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा । छत्री रूप फिरहु बन बीरा ॥
कठिन भूमि कोमल पद गामी । कवन हेतु बिचरहु बन स्वामी ॥
मृदुल मनोहर सुंदर गाता । सहत दुसह बन आतप बाता ॥
की तुम्ह तीनि देव महँ कोऊ । नर नारायन की तुम्ह दोऊ ॥

दो. जग कारन तारन भव भंजन धरनी भार ।
की तुम्ह अकिल भुवन पति लीन्ह मनुज अवतार ॥ १ ॥

कोसलेस दसरथ के जाए । हम पितु बचन मानि बन आए ॥
नाम राम लछिमन दौड भाई । संग नारि सुकुमारि सुहाई ॥
इहाँ हरि निसिचर बैदेही । विप्र फिरहिं हम खोजत तेही ॥
आपन चरित कहा हम गाई । कहहु विप्र निज कथा बुझाई ॥

प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना । सो सुख उमा नहिं बरना ॥
पुलकित तन मुख आव न बचना । देखत रुचिर बेष कै रचना ॥
पुनि धीरजु धरि अस्तुति कीन्ही । हरष हृदयँ निज नाथहि चीन्ही ॥
मोर न्याउ मैं पूछा साई । तुम्ह पूछहु कस नर की नाई ॥
तव माया बस फिरउँ भुलाना । ता तैं मैं नहिं प्रभु पहिचाना ॥

दो. एकु मैं मंद मोहबस कुटिल हृदय अग्यान ।
पुनि प्रभु मोहि बिसारेउ दीनबंधु भगवान ॥ २ ॥

जदपि नाथ बहु अवगुन मोरें । सेवक प्रभुहि परै जनि भोरें ॥
नाथ जीव तव मायाँ मोहा । सो निस्तरइ तुम्हारेहिं छोहा ॥
ता पर मैं रघुबीर दोहाई । जानउँ नहिं कछु भजन उपाई ॥
सेवक सुत पति मातु भरोसें । रहइ असोच बनइ प्रभु पोसें ॥
अस कहि परेउ चरन अकुलाई । निज तनु प्रगटि प्रीति उर छाई ॥
तब रघुपति उठाइ उर लावा । निज लोचन जल सीचि जुड़ावा ॥
सुनु कपि जियँ मानसि जनि ऊना । तैं मम प्रिय लछिमन ते दूना ॥
समदरसी मोहि कह सब कोऊ । सेवक प्रिय अनन्यगति सोऊ ॥

दो. सो अनन्य जाकेँ असि मति न टरइ हनुमंत ।
मैं सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवंत ॥ ३ ॥

देखि पवन सुत पति अनुकूला । हृदयँ हरष बीती सब सूला ॥
नाथ सैल पर कपिपति रहई । सो सुग्रीव दास तव अहई ॥
तेहि सन नाथ मयत्री कीजे । दीन जानि तेहि अभय करीजे ॥
सो सीता कर खोज कराइहि । जहँ तहँ मरकट कोटि पठाइहि ॥
एहि बिधि सकल कथा समुझाई । लिए दुऔ जन पीठि चढ़ाई ॥
जब सुग्रीवँ राम कहूँ देखा । अतिसय जन्म धन्य करि लेखा ॥
सादर मिलेउ नाइ पद माथा । भैंटेउ अनुज सहित रघुनाथा ॥
कपि कर मन बिचार एहि रीती । करिहहिं बिधि मो सन ए प्रीती ॥

दो. तब हनुमंत उभय दिसि की सब कथा सुनाइ ॥
पावक साखी देइ करि जोरी प्रीती दृढ़ाइ ॥ ४ ॥

कीन्ही प्रीति कछु बीच न राखा । लछमिन राम चरित सब भाषा ॥
कह सुग्रीव नयन भरि बारी । मिलिहि नाथ मिथिलेसकुमारी ॥
मंत्रिन्ह सहित इहाँ एक बारा । बैठ रहेउँ मैं करत बिचारा ॥
गगन पंथ देखी मैं जाता । परबस परी बहुत बिलपाता ॥
राम राम हा राम पुकारी । हमहि देखि दीन्हेउ पट डारी ॥
मागा राम तुरत तेहिं दीन्हा । पट उर लाइ सोच अति कीन्हा ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा । तजहु सोच मन आनहु धीरा ॥
सब प्रकार करिहुँ सेवकाई । जेहि बिधि मिलिहि जानकी आई ॥

दो. सखा बचन सुनि हरषे कृपासिधु बलसीव ।
कारन कवन बसहु बन मोहि कहहु सुग्रीव ॥ ५ ॥

नात बालि अरु मैं द्वौ भाई । प्रीति रही कछु बरनि न जाई ॥
मय सुत मायावी तेहि नाऊँ । आवा सो प्रभु हमरें गाऊँ ॥
अर्ध राति पुर द्वार पुकारा । बाली रिपु बल सहै न पारा ॥
धावा बालि देखि सो भागा । मैं पुनि गयउँ बंधु सँग लागा ॥
गिरिबर गुहाँ पैठ सो जाई । तब बाली मोहि कहा बुझाई ॥
परिखेसु मोहि एक पखवारा । नहिं आवौं तब जानेसु मारा ॥
मास दिवस तहँ रहेउँ खरारी । निसरी रुधिर धार तहँ भारी ॥
बालि हतेसि मोहि मारिहि आई । सिला देइ तहँ चलेउँ पराई ॥
मंत्रिन्ह पुर देखा विनु साई । दीन्हेउ मोहि राज बरिआई ॥
बालि ताहि मारि गृह आवा । देखि मोहि जियँ भेद बढ़ावा ॥
रिपु सम मोहि मारेसि अति भारी । हरि लीन्हेसि सर्वसु अरु नारी ॥
ताकेँ भय रघुबीर कृपाला । सकल भुवन मैं फिरेउँ बिहाला ॥
इहाँ साप बस आवत नाही । तदपि सभित रहउँ मन माहीं ॥
सुनि सेवक दुख दीनदयाला । फरकि उठीं द्वै भुजा बिसाला ॥

दो. सुनु सुग्रीव मारिहउँ बालिहि एकहिं बान ।
ब्रम्ह रुद्र सरनागत गएँ न उबरिहिं प्रान ॥ ६ ॥

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी । तिन्हहि बिलोकत पातक भारी ॥
निज दुख गिरि सम रज करि जाना । मित्रक दुख रज मेरु समाना ॥
जिन्ह केँ असि मति सहज न आई । ते सठ कत हठि करत मिताई ॥
कुपथ निवारि सुपंथ चलावा । गुन प्रगटे अवगुनन्हि दुरावा ॥
देत लेत मन संक न धरई । बल अनुमान सदा हित करई ॥
बिपति काल कर सतगुन नेहा । श्रुति कह संत मित्र गुन एहा ॥
आगेँ कह मृदु बचन बनाई । पाछेँ अनहित मन कुटिलाई ॥
जा कर चित अहि गति सम भाई । अस कुमित्र परिहरेहि भलाई ॥
सेवक सठ नृप कृपन कुनारी । कपटी मित्र सूल सम चारी ॥
सखा सोच त्यागहु बल मोरें । सब विधि घटब काज मैं तोरें ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा । बालि महाबल अति रनधीरा ॥
दुंदुभी अस्थि ताल देखराए । विनु प्रयास रघुनाथ ढहाए ॥
देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती । बालि बधब इन्ह भइ परतीती ॥
बार बार नावइ पद सीसा । प्रभुहि जानि मन हरष कपीसा ॥
उपजा ग्यान बचन तब बोला । नाथ कृपाँ मन भयउ अलोला ॥
सुख संपति परिवार बड़ाई । सब परिहरि करिहउँ सेवकाई ॥
ए सब रामभगति के बाधक । कहहिं संत तब पद अवराधक ॥
सन्नु मित्र सुख दुख जग माहीं । माया कृत परमारथ नाही ॥
बालि परम हित जासु प्रसादा । मिलेहु राम तुम्ह समन बिषादा ॥
सपनें जेहि सन होइ लराई । जागेँ समुझत मन सकुचाई ॥
अब प्रभु कृपा करहु एहि भाँती । सब तजि भजनु करौं दिन राती ॥
सुनि विराग संजुत कपि बानी । बोले विहँसि रामु धनुपानी ॥
जो कछु कहेहु सत्य सब सोई । सखा बचन मम मृषा न होई ॥
नट मरकट इव सबहि नचावत । रामु खगेस बेद अस गावत ॥

लै सुग्रीव संग रघुनाथा । चले चाप सायक गहि हाथा ॥
तब रघुपति सुग्रीव पठावा । गर्जेसि जाइ निकट बल पावा ॥
सुनत बालि क्रोधातुर धावा । गहि कर चरन नारि समुझावा ॥
सुनु पति जिन्हहि मिलेउ सुग्रीवा । ते द्वौ बंधु तेज बल सीवा ॥
कोसलेस सुत लच्छिमन रामा । कालहु जीति सकहिं संग्रामा ॥

दो. कह बालि सुनु भीरु प्रिय समदरसी रघुनाथ ।
जौ कदाचि मोहि मारहिं तौ पुनि होउँ सनाथ ॥ ७ ॥

अस कहि चला महा अभिमानी । तून समान सुग्रीवहि जानी ॥
भिरे उभौ बाली अति तर्जा । मुठिका मारि महाधुनि गर्जा ॥
तब सुग्रीव बिकल होइ भागा । मुष्टि प्रहार बज्र सम लागा ॥
मैं जो कहा रघुबीर कृपाला । बंधु न होइ मोर यह काला ॥
एकरूप तुम्ह भ्राता दोऊ । तेहि भ्रम तें नहिं मारेउँ सोऊ ॥
कर परसा सुग्रीव सरीरा । तनु भा कुलिस गई सब पीरा ॥
मेली कंठ सुमन कै माला । पठवा पुनि बल देइ बिसाला ॥
पुनि नाना विधि भई लराई । बिटप ओट देखहिं रघुराई ॥

दो. बहु छल बल सुग्रीव कर हियँ हारा भय मानि ।
मारा बालि राम तब हृदय माझ सर तानि ॥ ८ ॥

परा बिकल महि सर के लागेँ । पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगेँ ॥
स्याम गात सिर जटा बनाएँ । अरुन नयन सर चाप चढ़ाएँ ॥
पुनि पुनि चितइ चरन चित दीन्हा । सुफल जन्म माना प्रभु चीन्हा ॥
हृदयँ प्रीति मुख बचन कठोरा । बोला चितइ राम की ओरा ॥
धर्म हेतु अवतरेहु गोसाई । मारेहु मोहि व्याध की नाई ॥
मैं बैरी सुग्रीव पिआरा । अवगुन कवन नाथ मोहि मारा ॥
अनुज बधू भगिनी सुत नारी । सुनु सठ कन्या सम ए चारी ॥
इन्हहि कुदृष्टि बिलोकइ जोई । ताहि बधेँ कछु पाप न होई ॥
मुढ़ तोहि अतिसय अभिमाना । नारि सिखावन करसि न काना ॥
मम भुज बल आश्रित तेहि जानी । मारा चहसि अधम अभिमानी ॥

दो. सुनहु राम स्वामी सन चल न चातुरी मोरि ।
प्रभु अजहूँ मैं पापी अंतकाल गति तोरि ॥ ९ ॥

सुनत राम अति कोमल बानी । बालि सीस परसेउ निज पानी ॥
अचल करौं तनु राखहु प्राना । बालि कहा सुनु कृपानिधाना ॥
जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं । अंत राम कहि आवत नाही ॥
जासु नाम बल संकर कासी । देत सबहि सम गति अविनासी ॥
मम लोचन गोचर सोइ आवा । बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा ॥

छं. सो नयन गोचर जासु गुन नित नेति कहि श्रुति गावहीं ।
जिति पवन मन गो निरस करि मुनि ध्यान कबहुँक पावहीं ॥
मोहि जानि अति अभिमान बस प्रभु कहेउ राखु सरीरही ।
अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि बबूरही ॥ १ ॥

अब नाथ करि करुना बिलोकहु देहु जो बर मागऊँ ।
जेहिं जोनि जन्मौ कर्म बस तहँ राम पद अनुरागऊँ ॥
यह तनय मम सम बिनय बल कल्याणप्रद प्रभु लीजिए ।
गहि बाहँ सुर नर नाह आपन दास अंगद कीजिए ॥ २ ॥

दो. राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग ।
सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जानइ नाग ॥ १० ॥

राम बालि निज धाम पठावा । नगर लोग सब व्याकुल धावा ॥
नाना विधि बिलाप कर तारा । छूटे केस न देह सँभारा ॥
तारा बिकल देखि रघुराया । दीन्ह ग्यान हरि लीन्ही माया ॥
छिति जल पावक गगन समीरा । पंच रचित अति अधम सरीरा ॥
प्रगट सो तनु तव आगें सोवा । जीव नित्य केहि लगि तुम्ह रोवा ॥
उपजा ग्यान चरन तब लागी । लीन्हेसि परम भगति बर मागी ॥
उमा दारु जोषित की नाई । सबहि नचावत रामु गोसाई ॥
तब सुग्रीवहि आयसु दीन्हा । मृतक कर्म बिधिबत सब कीन्हा ॥
राम कहा अनुजहि समुझाई । राज देहु सुग्रीवहि जाई ॥
रघुपति चरन नाइ करि माथा । चले सकल प्रेरित रघुनाथा ॥

दो. लछिमन तुरत बोलाए पुरजन विप्र समाज ।
राजु दीन्ह सुग्रीव कहँ अंगद कहँ जुबराज ॥ ११ ॥

उमा राम सम हित जग माहीं । गुरु पितु मातु बंधु प्रभु नाहीं ॥
सुर नर मुनि सब के यह रीती । स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती ॥
बालि त्रास व्याकुल दिन राती । तन बहु ब्रन चिंताँ जर छाती ॥
सोइ सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ । अति कृपाल रघुबीर सुभाऊ ॥
जानतहुँ अस प्रभु परिहरही । काहे न बिपति जाल नर परही ॥
पुनि सुग्रीवहि लीन्ह बोलाई । बहु प्रकार नृपनीति सिखाई ॥
कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीसा । पुर न जाउँ दस चारि बरीसा ॥
गत ग्रीषम बरषा रितु आई । रहिहउँ निकट सैल पर छाई ॥
अंगद सहित करहु तुम्ह राजू । संतत हृदय धरेहु मम काजू ॥
जब सुग्रीव भवन फिर आए । रामु प्रवरषन गिरि पर छाए ॥

दो. प्रथमहिं देवन्ह गिरि गुहा राखेउ रुचिर बनाइ ।
राम कृपानिधि कछु दिन बास करहिंगे आइ ॥ १२ ॥

सुंदर बन कुसुमित अति सोभा । गुंजत मधुप निकर मधु लोभा ॥
कंद मूल फल पत्र सुहाए । भए बहुत जब ते प्रभु आए ॥
देखि मनोहर सैल अनूपा । रहे तहँ अनुज सहित सुरभूपा ॥
मधुकर खग मृग तनु धरि देवा । करहिं सिद्ध मुनि प्रभु के सेवा ॥
मंगलरूप भयउ बन तब ते । कीन्ह निवास रमापति जब ते ॥
फटिक सिला अति सुभ्र सुहाई । सुख आसीन तहाँ द्रौ भाई ॥
कहत अनुज सन कथा अनेका । भगति विरति नृपनीति बिबेका ॥
बरषा काल मेघ नभ छाए । गरजत लागत परम सुहाए ॥

दो. लछिमन देखु मोर गन नाचत बारिद पैखि ।
गृही विरति रत हरष जस बिष्णु भगत कहँ देखि ॥ १३ ॥

घन घमंड नभ गरजत घोरा । प्रिया हीन डरपत मन मोरा ॥
दामिनि दमक रह न घन माहीं । खल के प्रीति जथा थिर नाहीं ॥
बरषहिं जलद भूमि निअराएँ । जथा नवहिं बुध बिद्या पाएँ ॥
बूँद अघात सहहिं गिरि कैसें । खल के बचन संत सह जैसें ॥
छुद्र नदी भरि चलीं तोराई । जस थोरेहुँ धन खल इतराई ॥
भूमि परत भा ढाबर पानी । जनु जीवहि माया लपटानी ॥
समिटि समिटि जल भरहिं तलावा । जिमि सदगुन सज्जन पहिं आवा ॥
सरिता जल जलनिधि महुँ जाई । होई अचल जिमि जिव हरि पाई ॥

दो. हरित भूमि तून संकुल समुझि परहिं नहिं पंथ ।
जिमि पाखंड बाद तें गुप्त होहिं सदग्रंथ ॥ १४ ॥

दादुर धुनि चहु दिसा सुहाई । वेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई ॥
नव पल्लव भए बिटप अनेका । साधक मन जस मिलें बिबेका ॥
अर्क जबास पात बिनु भयऊ । जस सुराज खल उद्यम गयऊ ॥
खोजत कतहुँ मिलइ नहिं धूरी । करइ क्रोध जिमि धरमहि दूरी ॥
ससि संपन्न सोह महि कैसे । उपकारी के संपति जैसी ॥
निसि तम घन खद्योत बिराजा । जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा ॥
महाबृष्टि चलि फूटि किआरी । जिमि सुतंत्र भएँ बिगरहिं नारी ॥
कृषी निरावहिं चतुर किसाना । जिमि बुध तजहिं मोह मद माना ॥
देखिअत चक्रबाक खग नाहीं । कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीं ॥
ऊषर बरषइ तून नहिं जामा । जिमि हरिजन हियँ उपज न कामा ॥
बिबिध जंतु संकुल महि भ्राजा । प्रजा बाढ़ जिमि पाइ सुराजा ॥
जहँ तहँ रहे पथिक थकि नाना । जिमि इंद्रिय गन उपजें ग्याना ॥

दो. कबहुँ प्रबल बह मारुत जहँ तहँ मेघ बिलाहिं ।
जिमि कपूत के उपजें कुल सद्धर्म नसाहिं ॥ १५ (क) ॥

कबहुँ दिवस महँ निबिड़ तम कबहुँक प्रगट पतंग ।
बिनसइ उपजइ ग्यान जिमि पाइ कुसंग सुसंग ॥ १५ (ख) ॥

बरषा बिगत सरद रितु आई । लछिमन देखहु परम सुहाई ॥
फूलें कास सकल महि छाई । जनु बरषाँ कृत प्रगट बुढ़ाई ॥
उदित अगस्ति पंथ जल सोषा । जिमि लोभहि सोषइ संतोषा ॥
सरिता सर निर्मल जल सोहा । संत हृदय जस गत मद मोहा ॥
रस रस सूख सरित सर पानी । ममता त्याग करहिं जिमि ग्यानी ॥
जानि सरद रितु खंजन आए । पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए ॥
पंक न रेनु सोह असि धरनी । नीति निपुन नृप के जसि करनी ॥
जल संकोच बिकल भई मीना । अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना ॥
बिनु धन निर्मल सोह अकासा । हरिजन इव परिहरि सब आसा ॥
कहुँ कहुँ बृष्टि सारदी थोरी । कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी ॥

दो. चले हरषि तजि नगर नृप तापस बनिक भिखारि ।

जिमि हरिभगत पाइ श्रम तजहि आश्रमी चारि ॥१६ ॥

सुखी मीन जे नीर अगाधा । जिमि हरि सरन न एकउ बाधा ॥
फूलें कमल सोह सर कैसा । निर्गुन ब्रम्ह सगुन भएँ जैसा ॥
गुंजत मधुकर मुखर अनूपा । सुंदर खग रव नाना रूपा ॥
चक्रबाक मन दुख निसि पैखी । जिमि दुर्जन पर संपति देखी ॥
चातक रटत तृषा अति ओही । जिमि सुख लहइ न संकरद्रोही ॥
सरदातप निसि ससि अपहरई । संत दरस जिमि पातक टरई ॥
देखि इंदु चकोर समुदाई । चितवतहिं जिमि हरिजन हरि पाई ॥
मसक दंस बीते हिम त्रासा । जिमि द्विज द्रोह किएँ कुल नासा ॥

दो. भूमि जीव संकुल रहे गए सरद रितु पाइ ।
सदगुर मिले जाहिं जिमि संसय भ्रम समुदाइ ॥१७ ॥

बरषा गत निर्मल रितु आई । सुधि न तात सीता कै पाई ॥
एक बार कैसेहुँ सुधि जानौं । कालहु जीत निमिष महुँ आनौं ॥
कतहुँ रहउ जौं जीवति होई । तात जतन करि आनेउँ सोई ॥
सुग्रीवहुँ सुधि मोरि बिसारी । पावा राज कोस पुर नारी ॥
जेहिं सायक मारा मै बाली । तेहिं सर हतौं मूढ़ कहँ काली ॥
जासु कृपाँ छूटही मद मोहा । ता कहँ उमा कि सपनेहुँ कोहा ॥
जानहिं यह चरित्र मुनि ग्यानी । जिन्ह रघुबीर चरन रति मानी ॥
लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना । धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना ॥

दो. तब अनुजहि समुझावा रघुपति करुना सीव ॥
भय देखाइ लै आवहु तात सखा सुग्रीव ॥१८ ॥

इहाँ पवनसुत हृदयँ बिचारा । राम काजु सुग्रीवँ बिसारा ॥
निकट जाइ चरनन्हि सिरु नावा । चारिहु बिधि तेहि कहि समुझावा ॥
सुनि सुग्रीवँ परम भय माना । बिषयँ मोर हरि लीन्हेउ ग्याना ॥
अब मारुतसुत दूत समूहा । पठवहु जहँ तहँ बानर जूहा ॥
कहहु पाख महुँ आव न जोई । मोरें कर ता कर बध होई ॥
तब हनुमंत बोलाए दूता । सब कर करि सनमान बहुता ॥
भय अरु प्रीति नीति देखाई । चले सकल चरनन्हि सिर नाई ॥
एहि अवसर लछिमन पुर आए । क्रोध देखि जहँ तहँ कपि धाए ॥

दो. धनुष चढ़ाइ कहा तब जारि करउँ पुर छार ।
व्याकुल नगर देखि तब आयउ बालिकुमार ॥१९ ॥

चरन नाइ सिरु बिनती कीन्ही । लछिमन अभय बाँह तेहि दीन्ही ॥
क्रोधवंत लछिमन सुनि काना । कह कपीस अति भयँ अकुलाना ॥
सुनु हनुमंत संग लै तारा । करि बिनती समुझाउ कुमारा ॥
तारा सहित जाइ हनुमाना । चरन बंदि प्रभु सुजस बखाना ॥
करि बिनती मंदिर लै आए । चरन पखारि पलंग बैठाए ॥
तब कपीस चरनन्हि सिरु नावा । गहि भुज लछिमन कंठ लगावा ॥
नाथ बिषय सम मद कछु नाहीं । मुनि मन मोह करइ छन माहीं ॥
सुनत बिनती बचन सुख पावा । लछिमन तेहि बहु बिधि समुझावा ॥

पवन तनय सब कथा सुनाई । जेहि बिधि गए दूत समुदाई ॥

दो. हरषि चले सुग्रीव तब अंगदादि कपि साथ ।
रामानुज आगें करि आए जहँ रघुनाथ ॥२० ॥

नाइ चरन सिरु कह कर जोरी । नाथ मोहि कछु नाहिन खोरी ॥
अतिसय प्रबल देव तब माया । छूटइ राम करहु जौं दायी ॥
बिषय बस्य सुर नर मुनि स्वामी । मै पावँ पसु कपि अति कामी ॥
नारि नयन सर जाहि न लागा । घोर क्रोध तम निसि जो जागा ॥
लोभ पाँस जेहिं गर न बैधाया । सो नर तुम्ह समान रघुराया ॥
यह गुन साधन तें नहिं होई । तुम्हरी कृपाँ पाव कोइ कोई ॥
तब रघुपति बोले मुसकाई । तुम्ह प्रिय मोहि भरत जिमि भाई ॥
अब सोइ जतनु करहु मन लाई । जेहि बिधि सीता कै सुधि पाई ॥

दो. एहि बिधि होत बतकही आए बानर जूथ ।
नाना बरन सकल दिसि देखिअ कीस बरुथ ॥२१ ॥

बानर कटक उमा में देखा । सो मूरख जो करन चह लेखा ॥
आइ राम पद नावहिं माथा । निरखि बदनु सब होहिं सनाथा ॥
अस कपि एक न सेना माहीं । राम कुसल जेहि पूछी नाहीं ॥
यह कछु नहिं प्रभु कइ अधिकाई । बिस्वरूप ब्यापक रघुराई ॥
ठाढ़े जहँ तहँ आयसु पाई । कह सुग्रीव सबहि समुझाई ॥
राम काजु अरु मोर निहोरा । बानर जूथ जाहु चहुँ ओरा ॥
जनकसुता कहँ खोजहु जाई । मास दिवस महँ आएहु भाई ॥
अवधि मेटि जो बिनु सुधि पाएँ । आवइ बनिहि सो मोहि मराएँ ॥

दो. बचन सुनत सब बानर जहँ तहँ चले तुरंत ।
तब सुग्रीवँ बोलाए अंगद नल हनुमंत ॥२२ ॥

सुनहु नील अंगद हनुमाना । जामवंत मतिधीर सुजाना ॥
सकल सुभट मिलि दच्छिन जाहु । सीता सुधि पूँछेउ सब काहु ॥
मन क्रम बचन सो जतन बिचारेहु । रामचंद्र कर काजु सँवारेहु ॥
भानु पीठि सेइअ उर आगी । स्वामिहि सर्व भाव छल त्यागी ॥
तजि माया सेइअ परलोका । मिटहिं सकल भव संभव सोका ॥
देह धरे कर यह फलु भाई । भजिअ राम सब काम बिहाई ॥
सोइ गुनगय सोई बडभागी । जो रघुबीर चरन अनुरागी ॥
आयसु मागि चरन सिरु नाई । चले हरषि सुमिरत रघुराई ॥
पाछें पवन तनय सिरु नावा । जानि काज प्रभु निकट बोलावा ॥
परसा सीस सरोरुह पानी । करमुद्रिका दीन्हि जन जानी ॥
बहु प्रकार सीतहि समुझाएहु । कहि बल बिरह बेगि तुम्ह आएहु ॥
हनुमत जन्म सुफल करि माना । चलेउ हृदयँ धरि कृपानिधाना ॥
जद्यपि प्रभु जानत सब बाता । राजनीति राखत सुरवाता ॥

दो. चले सकल बन खोजत सरिता सर गिरि खोह ।
राम काज लयलीन मन बिसरा तन कर छोह ॥२३ ॥

कतहुँ होइ निसिचर सैं भेटा । प्रान लेहिं एक एक चपेटा ॥
 बहु प्रकार गिरि कानन हेरहिं । कोउ मुनि मिलत ताहि सब घेरहिं ॥
 लागि तृषा अतिसय अकुलाने । मिलइ न जल घन गहन भुलाने ॥
 मन हनुमान कीन्ह अनुमाना । मरन चहत सब बिनु जल पाना ॥
 चढ़ि गिरि सिखर चहुँ दिसि देखा । भूमि बिबिर एक कौतुक पेखा ॥
 चक्रबाक बक हंस उड़ाही । बहुतक खग प्रबिसहिं तेहि माहीं ॥
 गिरि ते उतरि पवनसुत आवा । सब कहुँ लै सोइ बिबर देखावा ॥
 आगें कै हनुमंतहि लीन्हा । पैठे बिबर बिलंबु न कीन्हा ॥

दो. दीख जाइ उपवन बर सर बिगसित बहु कंज ।
 मंदिर एक रुचिर तहँ बैठि नारि तप पुंज ॥ २४ ॥

दूरि ते ताहि सबन्हि सिर नावा । पूछें निज वृत्तांत सुनावा ॥
 तेहिं तब कहा करहु जल पाना । खाहु सुरस सुंदर फल नाना ॥
 मज्जनु कीन्ह मधुर फल खाए । तासु निकट पुनि सब चलि आए ॥
 तेहिं सब आपनि कथा सुनाई । मै अब जाब जहाँ रघुराई ॥
 मूदहु नयन बिबर तजि जाहू । पैहहु सीतहि जनि पछिताहू ॥
 नयन मूदि पुनि देखहिं बीरा । ठाढ़े सकल सिंधु कें तीरा ॥
 सो पुनि गई जहाँ रघुनाथा । जाइ कमल पद नाएसि माथा ॥
 नाना भाँति बिनय तेहिं कीन्ही । अनपायनी भगति प्रभु दीन्ही ॥

दो. बदरीबन कहुँ सो गई प्रभु अग्या धरि सीस ।
 उर धरि राम चरन जुग जे बंदत अज ईस ॥ २५ ॥

इहाँ बिचारहिं कपि मन माहीं । बीती अवधि काज कछु नाहीं ॥
 सब मिलि कहहिं परस्पर बाता । बिनु सुधि लएँ करब का भ्राता ॥
 कह अंगद लोचन भरि बारी । दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी ॥
 इहाँ न सुधि सीता कै पाई । उहाँ गएँ मारिहि कपिराई ॥
 पिता बधे पर मारत मोही । राखा राम निहोर न ओही ॥
 पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं । मरन भयउ कछु संसय नाहीं ॥
 अंगद बचन सुनत कपि बीरा । बोलि न सकहिं नयन बह नीरा ॥
 छन एक सोच मगन होइ रहे । पुनि अस वचन कहत सब भए ॥
 हम सीता कै सुधि लिन्हें बिना । नहिं जैहैं जुबराज प्रवीना ॥
 अस कहि लवन सिंधु तट जाई । बैठे कपि सब दर्भ डसाई ॥
 जामवंत अंगद दुख देखी । कहिं कथा उपदेस बिसेषी ॥
 तात राम कहुँ नर जनि मानहु । निर्गुन ब्रम्ह अजित अज जानहु ॥

दो. निज इच्छा प्रभु अवतरइ सुर महि गो द्विज लागि ।
 सगुन उपासक संग तहँ रहहिं मोच्छ सब त्यागि ॥ २६ ॥

एहि बिधि कथा कहहि बहु भाँती गिरि कंदराँ सुनी संपाती ॥
 बाहेर होइ देखि बहु कीसा । मोहि अहार दीन्ह जगदीसा ॥
 आजु सबहि कहुँ भच्छन करऊँ । दिन बहु चले अहार बिनु मरऊँ ॥
 कबहुँ न मिल भरि उदर अहारा । आजु दीन्ह बिधि एकहिं बारा ॥
 डरपे गीध बचन सुनि काना । अब भा मरन सत्य हम जाना ॥
 कपि सब उठे गीध कहुँ देखी । जामवंत मन सोच बिसेषी ॥

कह अंगद बिचारि मन माहीं । धन्य जटायू सम कोउ नाहीं ॥
 राम काज कारन तनु त्यागी । हरि पुर गयउ परम बड़ भागी ॥
 सुनि खग हरष सोक जुत बानी । आवा निकट कपिन्ह भय मानी ॥
 तिन्हहि अभय करि पूछेसि जाई । कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई ॥
 सुनि संपाति बंधु कै करनी । रघुपति महिमा बधुबिधि बरनी ॥

दो. मोहि लै जाहु सिंधुतट देउँ तिलांजलि ताहि ।
 बचन सहाइ करवि मै पैहहु खोजहु जाहि ॥ २७ ॥

अनुज क्रिया करि सागर तीरा । कहि निज कथा सुनहु कपि बीरा ॥
 हम द्वौ बंधु प्रथम तरुनाई । गगन गए रवि निकट उडाई ॥
 तेज न सहि सक सो फिरि आवा । मै अभिमानी रवि निअरावा ॥
 जरे पंख अति तेज अपारा । परेउँ भूमि करि घोर चिकारा ॥
 मुनि एक नाम चंद्रमा ओही । लागी दया देखी करि मोही ॥
 बहु प्रकार तेंहि ग्यान सुनावा । देहि जनित अभिमानी छड़ावा ॥
 त्रेताँ ब्रह्म मनुज तनु धरिही । तासु नारि निसिचर पति हरिही ॥
 तासु खोज पठइहि प्रभू दूता । तिन्हहि मिलें तैं होब पुनीता ॥
 जमिहहिं पंख करसि जनि चिंता । तिन्हहि देखाइ देहेसु तैं सीता ॥
 मुनि कइ गिरा सत्य भइ आजू । सुनि मम बचन करहु प्रभु काजू ॥
 गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका । तहँ रह रावन सहज असंका ॥
 तहँ असोक उपवन जहँ रहई ॥ सीता बैठि सोच रत अहई ॥

दो. मै देखेउँ तुम्ह नाहि गीघहि दष्टि अपार ।
 बूढ भयउँ न त करतेउँ कछुक सहाय तुम्हार ॥ २८ ॥

जो नाघइ सत जोजन सागर । करइ सो राम काज मति आगर ॥
 मोहि बिलोकि धरहु मन धीरा । राम कृपाँ कस भयउ सरीरा ॥
 पापिउ जा कर नाम सुमिरहीं । अति अपार भवसागर तरहीं ॥
 तासु दूत तुम्ह तजि कदराई । राम हृदयँ धरि करहु उपाई ॥
 अस कहि गरुड़ गीध जब गयऊ । तिन्ह कें मन अति बिसमय भयऊ ॥
 निज निज बल सब काहुँ भाषा । पार जाइ कर संसय राखा ॥
 जरठ भयउँ अब कहइ रिछेसा । नहिं तन रहा प्रथम बल लेसा ॥
 जबहिं त्रिविक्रम भए खरारी । तब मै तरुन रहेउँ बल भारी ॥

दो. बलि बाँधत प्रभु बाढेउ सो तनु बरनि न जाई ।
 उभय धरी महँ दीन्ही सात प्रदच्छन धाइ ॥ २९ ॥

अंगद कहइ जाउँ मै पारा । जियँ संसय कछु फिरती बारा ॥
 जामवंत कह तुम्ह सब लायक । पठइअ किमि सब ही कर नायक ॥
 कहइ रीछपति सुनु हनुमाना । का चुप साधि रहेहु बलवाना ॥
 पवन तनय बल पवन समाना । बुधि बिबेक विग्यान निधाना ॥
 कवन सो काज कठिन जग माहीं । जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं ॥
 राम काज लगि तब अवतारा । सुनतहिं भयउ पर्वताकारा ॥
 कनक बरन तन तेज बिराजा । मानहु अपर गिरिन्ह कर राजा ॥
 सिंहनाद करि बारहिं बारा । लीलहीं नाषउँ जलनिधि खारा ॥
 सहित सहाय रावनहि मारी । आनउँ इहाँ त्रिकूट उपारी ॥
 जामवंत मै पूछेउँ तोही । उचित सिखावनु दीजहु मोही ॥

एतना करहु तात तुम्ह जाई। सीतहि देखि कहहु सुधि आई ॥
तब निज भुज बल राजिव नैना। कौतुक लागि संग कपि सेना ॥

छं. -कपि सेन संग सँघारि निसिचर रामु सीतहि आनिहैं।
त्रैलोक पावन सुजसु सुर मुनि नारदादि बखानिहैं ॥
जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावई।
रघुबीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावई ॥

दो. भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहि जे नर अरु नारि।
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करिहि त्रिसिरारि ॥३०(क) ॥

सो. नीलोत्पल तन स्याम काम कोटि सोभा अधिक।
सुनिअ तासु गुन ग्राम जासु नाम अघ खग बधिक ॥३०(ख) ॥

मासपारायण, तेईसवाँ विश्राम

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
चतुर्थ सोपानः समाप्तः।
(किष्किन्धाकाण्ड समाप्त)

Shri Ram Charit Manas by Goswami Tulasidas was
encoded in ISCII by a group of volunteers at Ratlam.
The files were converted to ITRANS 5.2 encoding for
creating this devanagari version.

Please contact Sri Vineet Chaitanya (vc@iiit.net)
of Indian Institute of Information Technology, Hyder-
abad for further details.

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

Last updated January 22, 2000